Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. IV, Issue VII, July-2012, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

आधुनिक बोध के उपन्यास और शिवानी

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. IV, Issue VII, July-2012, ISSN 2230-7540

आधुनिक बोध के उपन्यास और शिवानी

Seema Narwal

Assistant Professor in Hindi, Gaur College of Education, Hisar

---

कुछ विद्वानों ने स्वातंत्रयोत्तर उपन्यासों को 'आधुनिकता–बोध' के रूप में स्वीकार किया है। साठोत्तरी उपन्यास 'आधुनिकतावादी' विचारधारा से विषेष रूप से प्रभावित हैं।

औद्योगीकरण, बौद्धिकता के अतिरेक, यंत्रीकरण तथा अस्तित्ववादी पाष्चात्य विचारधाराओं के फलस्वरूप आधुनिकता की जो स्थिति उत्पन्न हुई उसका प्रतिबिम्ब साहित्य की अन्य विधाओं के सामन हिन्दी–उपन्यास पर भी पड़ा। इन स्थितियों के कारण व्यक्ति की अपनी पहचान और व्यक्तित्व खो गया। इस खोए हुए व्यक्तित्व की 'खोज प्रक्रिया' का नाम आधुनिकता है।

आधुनिकता के संबंध में डॉ. लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय के मत तर्कसंगत प्रतीत होते हैं – '' वास्तव में वर्तमान वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति के फलस्वरूप निर्मित मानव–मन और परिवर्तित मानव–बोध तथा युग–बोध का ऐतिहासिक परम्परा के साथ समन्वय स्थापित कर जीवन के नये क्षितिज स्पर्ष करना ही आधुनिकता है।''

प्रगतिशील और मूल्यावादी विचारक आधुनिकता–बोध को मानवता के भविष्य–निर्माण के संघर्ष में बाधक मानते हैं। उनके अनुसार आधुनिक यंत्र दानव (यांत्रिकीकरण) के समक्ष अपनी हीनता और व्यर्थता के बोध से आक्राँत मनुष्य बेहतर जीवन–निर्माण के लिए संघर्ष नहीं कर सकता। इसलिए विसंगति, विडंबना, व्यर्थता, अजनबीपन, नैराष्य, कुण्ठा, संत्रास आदि को आधुननिकता–बोध का पर्याय मान लेना उचित नहीं है। वर्तमान औद्योगिक सभ्यता के अंतर्गत मनुष्य का पदार्थीकृत होना उसकी स्थिति है। निराशा, ऊब, ग्लानि, व्यर्थता–बोध आज का जीवन सत्य है, यह स्वीकार कर लेने से मनुष्य की संकल्प शक्ति का ह्रास होता है और वह नियति का दास बनकर रह जाता है इसलिए आधुनिक प्रगतिषील विचारक इस 'आधुनिकता–बोध' के स्थान पर 'यथार्थ–बोध' को महत्व देते हैं। इस संबंध में 'मुक्तिबोध' जी का मत हैं – ''अन्याय के खिलाफ आवाज बुलन्द करना आधुनिक भावबोध के अंतर्गत है। आधुनिक भावबोध के अंतर्गत यह भी है कि मानवता के भविष्य निर्माण के संघर्ष में हम और भी दत्तचित हों तथा हम वर्तमान स्थिति को सुधारें, नैतिक ह्रास को थामें, उत्पीड़ित मनुष्य के साथ एकात्म होकर उसकी मुक्ति की उपाय योजना करें।''

आधुनिकता–बोध और यथार्थ–बोध दोनों का एक ही उद्देष्य 'स्वतंत्रता की खोज करना ' है। दोनों एक दूसरे के पूरक माने जा सकते हैं। आधुनिकता–बोध समस्या का ज्ञान है तो यथार्थ–बोध उस समस्या, उस अन्याय के विरूद्ध बुलन्द आवाज है।

स्वातंत्रयोत्तर युग में नारी–जागरण एवं स्त्री–षिक्षा का व्यापक प्रचार–प्रसार हुआ। इसके परिणाम स्वरूप उपन्यास ही नहीं साहित्य के हर क्षेत्र में समृद्धि प्रदान करने वाली महिला रचनाकारों की एक सषक्त पीढ़ी का उदय हुआ।

स्वातंत्रयोत्तर युग की महिला उपन्यासकारों के संबंध में डॉ. रामचन्द तिवारी जी ने लिखा है कि – ''स्वतंत्रता–प्राप्ति के बाद नारी–जागरण और स्त्री–षिक्षा के व्यापक प्रचार–प्रसार के फलस्वरूप हिन्दी–कथा रचना के क्षेत्र में महिला रचनाकारों की एक सषक्त पीढ़ी का उदय हुआ। षिवानी, शषिप्रभा, कृष्णा सोबती, दीप्ति खण्डेलवाल, मन्नू भंडारी, ऊषा पियंबदा, राजी शेठ, मंजुल भगत, मृदुला गर्ग, ममता कालिया, दिनेष नंदिनी, डालमिया, निरूपमा सोबती, महेरून्निसा, चन्द्रकान्ता, कान्ता भारती, कुसुम कुमार मृणाल पाण्डेय, नासिरा शर्मा, सूर्यवाला आदि महिला साहित्यकारों ने समकालीन उपन्यास लेखन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। उपन्यासकार षिवानी के संबंध में उन्होंने लिखा है कि – ''षिवानी'' ने संख्या की दृष्टि से सबसे अधिक उपन्यास लिखे हैं। ये मनोरंजक कथा गढ़ने से सिद्धहस्त हैं। उनके उपन्यासों में रहस्य रोमांच, भावुकता, स्वच्छंद कल्पना और मनोरंजन का पुट उन्हें पठनीय बनाता है।''

समय की विषत परिस्थितियों के फलस्वरूप षिवानी जी जैसी सषक्त उपन्यासकार का उदय हुआ। उन्होंने ऐतिहासिक, राष्ट्रीय, राजनैतिक, सामाजिक, पारिवारिक, वैयक्तिक, आर्थिक, धार्मिक आदि सभी विषयों पर लिखा। तत्कालीन समाज की विभिन्न समस्याओं, पारिवारि विघटन, छुआ–छूत, वैधव्य, दहेज, रखैल–प्रथा, वैष्यावृत्ति, अवैध मातृत्व, अंतर्जातीय विवाह, अनाचार भ्रष्टाचार, धार्मिक पाखण्ड आदि को अपने उपन्यासों का वर्ण्य विषय बनाया।

शिवानी जी ने बड़े और लघु दोनों प्रकार के उपन्यासों की रचना की है। इन्होंने पच्चीस उपन्यासों की रचना की है। सभी उपन्यास 'आधुनिकता–बोध' के ज्वलंत उदाहरण कहे जा सकते हैं। समाज की हर छोटी बड़ी समस्या को इनके उपन्यासों में स्थान मिला है।

लघु उपन्यासकारों में षिवानी महत्वपूर्ण हैं। सन् 1970 ई. में लघु उपन्यासों की रचना की ओर प्रवृत्त हुई हैं। इनका प्रथम लघु उपन्यास विशकन्या है जो सन् 1970 ई. में प्रकाषित हुआ। हिन्दी–उपन्यास का भविष्य उन्नति की ओर अग्रसर हो रहा है। आज इस क्षेत्र में लघु उपन्यास एवं षिल्प–प्रधान उपन्यासों के साथ–साथ हिन्दी–उपन्यासों में एक साथ आँचलिक, अंतर्प्रान्तीय एवं अंतर्राष्ट्रीय जीवन–परिवेश के चित्र को उभारा जा रहा है, ऐसे उपन्यासकारों में शिवानी जी महत्वपूर्ण रही हैं।

षिवानी जी उन उपन्यासकारों की कोटि में नहीं आई हैं जिन्हें आलोचक बड़ी आसानी से या तो किसी बाद के कटघरे में बंद

www.ignited.in

कर देता है, या चुटकी में उड़ा देता है। षिवानी जीवंत परिवेष और सौन्दर्य–पारखी रही हैं। उनके उपन्यासों में मार्मिक संवेदना और व्यापक दृष्टि है। शिवानी जी ने महिला कथाकारों में अपना अलग स्थान बनाया है। उनके उपन्यासों में कुमाऊँ की सुकुमारता, बंगाल की भावुकता, गुजरात की कुलीनता और लखनऊ की नजाकत झलकती है। उन्होंने यथार्थ को धकेल केवल कल्पना के मसिपात्र में लेखनी नहीं डुबाई। वह अपने समय की एक ईमानदार और सफल तथा सर्वाधिक लोकप्रिय लेखिक थीं।

सहायक ग्रन्थ सूची

1. अमृतलाल नागर का उपन्यास, प्रकाशचन्द्र मिश्र, साहित्य भारती, प्र., कानपुर

2. अस्तित्ववाद और द्वितीय, डॉ. श्यामसुन्दर मिश्र,

3. अनुभव सार कुबेरनाथ श्रीवास्तव, मानवता मंदिर, होशिंयारपुर

4. आधुनिक हिन्दी उपन्यास में, वस्तु विन्यास डॉ. सरोजिनी त्रिपाठी ग्रंथम, रामबाग, कानपुर

5. आधुनिक हिन्दी कविता : सर्जनात्मक संदर्भ डॉ. रामदरश मिश्र इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली

6. आज का हिन्दी साहित्य, डॉ. रामदरश मिश्र

7. आँचलिकता और हिन्दी उपन्यास, डॉ. नगीना जैन

8. उपन्यास स्वरूप और संवेदना, राजेन्द्र यादव, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

9. उपन्यास सिद्धांत और संरचना, रविन्द्र कुमार जैन, नेशनल पब्लिशिंग, हाउस नई दिल्ली